

ज्ञाति मेटका मासिकाप



लेखक
द्वितीय वेदालक्ष्मा

कारणक
भारत वर्षीय आर्यकुमार पोरपट
गुरुदाशाद

ॐ श्री॒श्वर् ॥

जाति भेद का अभिशाप

लेखक-

श्री प० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार,
स. सम्पादक, दैनिक चीर अर्जुन, दिल्ली

प्रकाशक-

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
मुरादाबाद

प्रकाशक—
 उमेश चन्द्र 'विद्यार्थी'
 बी. एस. सी.
 प्रकाशन मंत्री
 भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
 मुरादाबाद

प्रथम वार	—	१०००
सन्	—	१६२० ई०
मूल्य	—	आठ आना

मुद्रक—
 राष्ट्रीय मुद्रणालय,
 बिजनौर

दो शब्द

जाति भेद भारतीय समाज का अभिशाप है भारतीय समाज के विशाल संगठन को यह रोग धुन की भाँति खा रहा है भारतीय समाज की आधार भित्ति वर्ण व्यवस्था के पुनरुत्थान के मार्ग को यह सब से बड़ी बाधा है और भारतीय आदर्शों के बीच में चन्द्रमा के कलंक के सामान है।

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् ने अपने जीवन में इस कुप्रथा के विरुद्ध प्रबल आनंदोलन किये हैं और यह उस के कार्य क्रम का एक अंग रहा है सन् १९४८ ई० में शिकोहा बाद में होने वाले सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उत्तर प्रदेशीय सरकार के सभा सचिव श्री चौ० चरण सिंह जी ने परिषद् से केवल इसी एक कार्य क्रम को अपनाने का अनुरोध किया था।

हर्ष की बात है कि परिषद् काफी प्रयत्नों के पश्चात इस दिशा में एक पग उठा सकी है प्रस्तुत पुस्तक इस का प्रमाण है पुस्तक के लेखक महोदय विद्वान तथा अनुभवी पत्रकार होने के अतिरिक्त समाज शास्त्र विषय से गहरी दिलचस्पी रखते हैं। अतः पुस्तक अपने विषय का प्रतिपादन करने में सफल हुई है इस में कोई सदेह नहीं है।

पुस्तक का प्रचार और सफलता अब आर्य कुमार सभाओं पर निर्भर है उन का कर्तव्य है कि अधिक से अधिक संख्या में पुस्तकों को जनता तक पहुंचावें और परिषद् को शीघ्र ही द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने का अवसर प्रदान करें।

भवदीय

ईश्वर दयालु आर्य

कार्य कर्ता प्रधान

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

पाकिस्तान और जाति भेद

❀-❀

दो आश्चर्य

संसार के सात आश्चर्य सुविख्यात हैं। परन्तु गत दो वर्षों में हमारे देश में भी दो आश्चर्य हुए हैं।

पहला आश्चर्य यह है कि अग्रेज हिन्दुस्तान से चले गये क्या अंग्रेजों का हिन्दुगतान से चला जाना आश्चर्यनहीं है?

जिस राज्य के लिये इतिहास में भाई ने भाई का खून बहाया हो और बेटे ने बाप को कारागार में ढाला हो, जिस राज्य के लिए वंश के वंश नष्ट भ्रष्ट और नाम-शेष हो गये हों उस राज्य को इस प्रकार आसानी से छोड़ जाना क्या कोई छोटी बात है? राज्य की प्राप्ति के लिये विभिन्न राजाओं द्वारा विभिन्न समयों में किये गये अत्याकारों और वहाए गये रक्त से इतिहास का एक एक पृष्ठ लथपथ है अग्रेजों ने भी लगातार डेढ़ सौ साल तक हमारे देश में अपने साम्राज्यवादी पंजे की जकड़ को सुन्दर करने के लिये न जाने कितनी तरह के ब्रल छिद्र किये, कितनी तरह के पापड़ बेले और न जाने कितनों की असीसे और दुसीसें लीं। क्या मराठों और सिक्खों से दर्जनों लड़ाईयां इसीलिए

लड़ींगई थीं कि एक दिन हिन्दुस्तान को छोड़ कर जाना पड़ेगा ? बंगाल के उमाचन्द्र, महाराज चेतसिंह, अबध की वेगमों, बिठूर के नाना साहब तथा पंजाब की महारानी जिन्दां के साथ अमानुषिक बर्ताव करते समय क्या किसी अंग्रेज को यह स्वप्न भी आया था कि एक दिन इस पाप के प्रायशिच्तत स्वरूप हमें इस हरे भरे शस्य-श्यामल देश को छोड़ना भी पड़ेगा । जिसने बन्दे मातरम कहा उसे बेंतें लगाई, जिसने स्वराज्य का नाम लिया उसे जेल में ढाल दिया और जिसने राज भक्त प्रजा में देश भक्ति की भावना भरने के लिए बराबत का फंडा बुलान्द किया उसे फांसी पर लटका दिया । जिस राज्य की रक्षा के नाम पर खुदी राम बोस से लेकर सन् ४२ के राजनारायण तक न जाने भारत के कितने नौनिह लों को अपनेको अन्याय का शिकार बनाकर नकेवल अपने प्यारे देश से अपितु संसार से उनके गले में फांसी का फंदा ढाल कर सदा के लिए अलग कर दिया उसी राज्य को १५ अगस्त सन् ४७ के दिन अंग्रेज सहसा तिनके की तरह त्याग कर चल दिये — यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है ? क्या इतिहास में कोई दूसरा दृष्टान्त भी ढूँढा जा सकता है जब एक जाति स्वेच्छा से अपने राज्य को इस प्रकार तिलांजलि देकर चली जाए

भारत से अंग्रेजों का चला जाना पहला आश्चर्य है तो दूसरा आश्चर्य है — पाकिस्तान का बनना ।

क्या पाकिस्तान का बनना भी आश्चर्य नहीं है ? परमात्मा ने जिसे अखण्ड बनाया था, चिर प्रहरी के रूप में नगाधिराज महान् हिमालय जिसकी अखण्डता का रक्षक था, सिन्धु नर्वदा, ब्रह्मपुत्र, और पद्मा की विशालधाराये' पारिपात्र घटपुर (सतपुड़ा) और विन्ध्यवी उच्चतम मेंखलाये जिसकी अखण्डता में परिवर्तन न ला सकी, नादिरशाह और तैमूरलंग के रोमांचकारी आक्रमण जिसे छिन्न भिन्न न कर सके, औरंगजेब और फरुखसियर के अत्याचार जिसे खण्ड खण्ड न कर सके, अक्सात् एक रात में हो वह देश खण्ड खण्ड होगया इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या हो सकता है ? विश्व के मानचित्र में जिसका कहीं निशान नहीं था संसार के इतिहास में जिसका कहीं नाम तक नहीं था वह पाकिस्तान नाम का एक नया देश और नया राज्य बन गया इससे बड़ी अनोखी घटना और क्या हो सकती है । देश के बड़े से बड़े नेता जिसे शेखचिल्ली का स्वप्न कहते रहे, बड़े से बड़े विचारक जिसे हवाई किला समझते रहे और एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक देश के आबाल वृद्ध नर-नारी ने जिसका तीव्र विरोध किया हमारी आँखों के आगे ही वह पाकिस्तान बनाने की अश्रूतपूर्व, अकलिपतपूर्व और अभूतपूर्व घटना घट गई और हम उसे नहीं टाल सके इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या होगा ?

परन्तु सत्य कल्पना से भी विचित्र होता है। और दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट रूप से हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि ये दोनों घटनायें आश्चर्य-जनक वेशक हों, परन्तु अब इन्हें मुठलाया नहीं जा सकता। अंग्रेज यहां से चले गये, यह एक सत्य है। पाकिस्तान वन गया, यह भी एक सत्य है। अब यदि अंग्रेजों के दुबारा आने की कल्पना मूर्खतापूर्ण है, तो खरिद्र भारत को पुनः अखण्ड बनाने की कल्पना भी उतनी ही मूर्खतापूर्ण है। और इन दो वर्षों के विवात समय ने इस बात की और पुष्टि कर दी है कि इतिहास की काल-धारा इतनी आसानी से वापिस नहीं लौटाई जा सकती। आखिर कभी अफगानिस्तान भी तो भारत का ही अंग था। ६ वीं शताब्दी में वहां पाल वंश का राज्य था। एक समय हिन्दूकुश पर्वत भारत की उत्तर पश्चिम की सीमा थी। परन्तु आज अमृतसर के आगे हिन्दू का बच्चा नजार नहीं आता। इसका कारण क्या है? भावावेश के वशीभूत होकर उथलेपन से नहीं, ऐतिहाहिक घटनाओं को दृष्टि में रखकर पूरी गम्भीरता के साथ हमें इस पाकिस्तान की समस्या पर विचार करना चाहिये। जो घटना घट चुकी उसके प्रति असन्तोष और रोष प्रकट करने से क्या लाभ है? सांप निवल जाने पर लकीर पीटना बेकार है। सांप को मारने के लिये उसके बिलतक पहुँचना आवश्यक है। पाकिस्तान को भला-बुरा कहने की अपेक्षा हमें उसके मूल की खोज करना चाहिये वह मूल क्या है, यह जानने के लिये कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की दबेदना करें

दो ऐतिहासिक घटनायें

कश्मीर धरित्री का स्वग कहा जाता है।

“अगर फिरदौस बर्द्द्ये जमीनस्त ।

हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त ।”

“यह अमरन को लोक, यहाँ कहुँ बसत पुरन्दर ।”

परन्तु वही पृथ्वी का नन्दन-वन आज हमारी चिन्ता का सब से बड़ा विषय बना हुआ है। कश्मीरी भाषा पैशाची संस्कृत से मिलती जुलती है। कश्मीर के मुसलमान आज भी अपने नाम के साथ किंचलू. सप्रै, परिण्वत इत्यादि का प्रयोग करते हैं - अदुल्ला पर्शद्वत, रशीद अहमद सप्रै, सैफुद्दीन-किंचलू आदि। क्षीर भवानी, अनन्त नभा, इच्छाबल, पहलगांव श्री अमरनाथ, मातेंगडेश्वर, शारदामठ आदि अनेक तीर्थ काश्मीर में ही हैं, जहाँ प्रति वर्ष मेला लगता है। ये तीर्थ वहाँ की प्राचीन हिन्दू सभ्यता के द्योतक हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से काश्मीर सब से बड़ी रियासत है। सन् १८५० में महाराज गुलाब सिंह ने २५लाख रुपये में इसे अंग्रेजों से खरीदा था। परन्तु इस हिन्दू रियासत में भी आज ८० प्रतिशत मुसलमान हैं। और वे सब मुसलमान जनमत लिये लाने पर पाकिस्तान के ८३

में बोट देंगे, यह कल्पना करते ही हमारे हृदय में कम्पन होने लगता है। परन्तु इस कल्पना को मन में स्थान भी क्यों मिलता है। इसीलिये न कि आज वहां मुसलमानों का आधिक्य है। परन्तु मुसलमानों का यह आधिक्य वहां कैसे होगया? अवन्तिवर्मा, ललितादित्य और चन्द्रपीड जैसे राजाओं के कश्मीर में, संस्कृत साहित्य में इतिहास के एकमत्र प्रन्थ 'रजतरङ्गिणी' के लेखक कवि कलहण के कश्मीर में, 'कश्मीर जरथ कदुतापि नितान्त रम्या' कहने वाले सरस्वती के वरदपुत्र महाकवि कालिदास की प्रेरणा भूमि कश्मीर में; आर्य-हिन्दू और बौद्ध सभ्यता के गढ़ कश्मीर में मुसलमानों का इतना अधिक बाहुल्य कैसे होगया? लगभग ५० वर्ष पहिले तो वहां एक भी मुसलमान नहीं था।

तेरहवीं शताब्दी की बात है। रतनजू नामका एक चढ़ती जबानी का युवक कश्मीर की नपत्यका में आया। उस समय राजा सहदेव राज्य करते थे। किसी तरह राजसभा में उसका प्रवेश हो गया। धीरे धीरे अपनी योग्यता के बलपर एकऊँचे और प्रतिष्ठित पद पर पहुंच गया। रतनजू को हिन्दु धर्म से बड़ा प्रेम था। वह नित्य गीता की कथा सुना करता था। उसका अपना कोई दीन ईमान नहीं था। धीरे धीरे वह इतना प्रभावित हो गया था कि हिन्दु धर्म प्रहण करने को तयार था। एक दिन गीता के १८ वें अध्याय के ४७ वें श्लोक की ब्याख्या करते हुए

पण्डित ने कहा, अपना धर्म चाहे कितना ही गुण हीन क्यों न हो परन्तु दूसरे का धर्म स्वीकार करना ठीक नहीं। इस पर रतनजू की भावना का ठेस लगा। उसने पण्डित से पूछा— क्या मैं आपका धर्म प्रहण नहीं कर सकता। पण्डित ने कहा— “बिल्कुल नहीं।” रतनजू को आशा पर तुषारपात हो गया। उसी निराशा की प्रतीक्षिया स्वरूप उसने निश्चय किया कि कल सवेरे जो व्यक्ति मुझे सबसे पहले दिखाई देगा मैं उसी का धर्म प्रहण कर लूँगा।

उसके इस निश्चय का ज्ञान बुलबुलशाह नाम के एक मुसलमान फकीर को भी ही गया। वह दूसरे दिन प्रभात बेला में ही अपना भिज्जापात्र लेकर रतनजू के महल के नीचे उपस्थित हो गया रतनजू ने उसे देखा और पास आकर बोला—

“क्या आप मुझे अपने धर्म की दीक्षा दे सकते हैं।

“इस्लाम का द्वार तो सबके लिये खुला है। और मेरे लिये इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती है कि तुम्हारे जैसा एक प्रमुख राज्याधिकारी मेरा धर्मवन्धु बनना चाहता है”— बुलबुलशाह ने उत्तर दिया।

इस पर वह मुसलमान हो गया। उसने जोवन भर इस्लाम का खूब प्रचार किया। उसका पुत्र शाहमीर उससे भी

बढ़कर निवल। शाहमीर ने राजा सहदेव को मार कर जबरदस्ती राज सिंहासन पर अधिकार कर लिया और महारानी को बलान् अपने घर में डाल लिया। रानी ने सतीत्व की रक्षा के लिये अपने पेट में छुरा भोंक कर आत्म हत्या कर ली। कहते हैं जिन कश्मीरी पण्डितों ने उस समय मुसलमान बनने से इन्कार किया। उनको शाहमीर ने जोरीयों में बन्द करके फेन्नम में छुचा दिया। जिसस्थान पर ये लोग छुबाये एये थे श्रीनगर में वह स्थान अभी तक बट मजार के नाम से प्रसिद्ध है।

महाराज गुलाबसिंह के पश्चात् महाराज रणधीरसिंह के समय काश्मीर के समस्त मुसलमानों ने दरबार से प्रार्थना की थी कि उन्हें फिर से हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लिया जाए। महाराज तो स्वयं तय्यार हो गये परन्तु कश्मीर के धर्माचार्य तय्यार नहीं हुए।

यह बटना आपेक्षाकृत कुछ पुरानी कही जा सकती है। परन्तु कुछ ही वर्ष हुए कोई एक लाख चिव राजपूतों ने काश्मीर नरेश से प्रार्थना की कि उन्हें फिर हिन्दू बना लिया जाये। परन्तु हिन्दू राजपूत उन्हें अपने में मिलाने को तय्यार नहीं हुए। हिन्दू राजपूतों के इस इंकार का परिणाम क्या हुआ और इन मुसलमान चिवों के मन पर इस की व्या प्रतिक्रिया हुई यह जानने के लिये इतना ही जानना पर्याप्त है कि आज आजाद

काश्मीर और लन के मुख्य सरदार मुहम्मद इब्राहीम खां उसी चिक जाति के राजपूत हैं।

ढाका पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी है। वहाँ की एक घटना है।

कालिचंद नामका एक जन्म का ब्राह्मण हृष्ट पुष्ट बांका युवक नित्य नदी में स्नान करने जाया करता था। जिस मार्ग से वह आया जाया करता था वह ढाका के नवाब के महलों के नीचे से होकर जाता था। एक दिन अचानक नवाब की इकलौती बेटी की नजर उस युवक पर पड़ गई। उसने देखा ब्राह्मण युवक की मसे भीग रही हैं और अंग अंग से यौवन टपके पड़ता है, जैसे किसी ने सांचे में ढालकर साक्षात् यौवन की मूर्ति का निर्माण किया हो। वह नित्य भरोखे में से उस युवक को देखने लगी, धीरे धीरे प्राण्य के देवता ने उस नवाब नन्दिनी के मन में प्रेम की गाँठ बांध दी और उसने मन ही मन अपना जीवन उसे सौंप दिया। उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह इस युवक को ही अपना पति बरण करेगी जब नवाब को यह समाचार मिला तो उसने अपनी कन्या को बहुतेरा समझाया। पर कन्या नहीं मानी शायद दिल का सौदा दुबारा नहीं होता। आखिर अपनो इकलौती बेटी का जीवन संकट का प्रश्न समझ कर नवाब ने उस ब्राह्मण युवक को

बुलाकर उससे अपनी बेटी के साथ विवाह की बात कही। युवक ने साफ मना कर दिया और कहा — “यह नहीं हो सकता मैं हिंदू होकर मुसलमान कन्या से विवाह नहीं कर सकता,,।

नवाब ने कहा—इसमें हिंदू मुसलमान का क्या प्रश्न है। मेरी कन्या तुमसे विवाह करना चाहती है। तुम उसे अंगी कार करो तुम उसे हिंदू बना लो मुझे कोई आपत्ति नहीं,,।

परन्तु उस समय के पंडित इस बात के लिये तथ्यार नहीं हुए उनका कहना था कि शास्त्र में किसी मुसलमान को हिंदू बनाने का विधान नहीं है।

अब नवाब क्या करे? ब्राह्मण युवक मुसलमानी से शादी करने को तथ्यार नहीं मुसलमान कन्या को हिंदू बनाने की शाख आज्ञा नहीं देते, और बेटी है कि चातक की तरह स्वाति बूँद का ब्रत साधे है। विवाह करेगी तो उसी ब्राह्मण युवक से, नहीं तो यों ही प्राण दे देगी और कोई गति न देख नवाब ने मन में डरते डरते उस ब्राह्मण युवक से कहा “नौजवान तुम ही मुसलमान क्यों नहीं बन जाते! मुसलमान बन जाओ और शहजादी से निकाह करके मेरे साथ रहो मैं अपने राज्य में आधा हिस्सा तुम को देकर तुम्हें भी अपनी हैसियत का नवाब बना दूँगा। तुम आधे राज्य पर हक्कमत करना,,।

नवाब ने यह कह कर अपनी ओर से बेटी की इच्छा

पूर्ति के लिये जो वह बड़े से बड़े मूल्य प्रदान कर सकता था वह पेश कर दिया परन्तु इस ब्राह्मण युवक के मना कर ने पर इस प्रस्तु वं का उल्टा ही असर पड़ा वह कहने लगा — क्या तुम्हारे इस प्रलोभन से मैं अपने बाप दादों के धर्म को तिला-उज्जलि दे दूँ विधर्मी बन जाऊँ ? नवाब साहब, मुझे मुसलमान बनने की सज्जाह देते हुए तुम्हें जरा भी लज्जा नहीं आती ! मैं सौ जन्म में भी अपने का स्लेच्छ कइलाने को तय्यार नहीं ।

इस ज्ञाम की इस प्रकर स्पष्ट अश्वेलना देख कर नवाब भी अपे में रहा और जोश में आकर उसने युवक के वध की आज्ञा देदी ।

ब्राह्मण युवक बधस्थल में गर्दन झुकाए खड़ा था । उसके धड़ से सिर को अलग करने के लिए जल्लाद की तलवार उठ चुकी थी वातावरण में सज्जाटा था । इतने में ही वही नवाब नन्दनी गिरती पड़ती लड़खड़ती वहाँ सामने आकर घड़ी हो गई और अपने पिता से कहने लगी आपने इनका वध करने की आज्ञा क्यों दी है ? इनका क्या अपराध है ? अपराध तो सारा मेरा है मेरे ही कारण इनको यह मुसीबत उठानी पड़ रही हैं यदि दृढ़ देना हो तो मुझे दीजिए मेरे वध की आज्ञा दीजिए” फिर जल्लाद के पास जाकर कहने लगी —— “जल्लाद इन्हे छोड़ दो ये निर-अपराध हैं । अपराधी मैं हूँ । मेरा वध करो । मेरे रहते मेरे

प्राण-पति पर आँच भी आए, यह मैं नहीं सह सकती”

इस दृश्य को देख कर युवक हृदय विचलित होगयः
उसने देखा कि एक सती-साध्वी पति-परायणा देवी में और इस
कन्या में कोई अन्तर नहीं। वह उसे हृदय से ग्रहण करने को
तैयार हो गया। उसने विवाह की स्वीकृति दे दी। वह छोड़
दिया गया।

वह युवक अब नवाब नन्दनी को लेकर अपने पिता तथा
अन्य परिषट्-पुरोहितों के पास गया। सबके पास जाकर उसने
प्रार्थना की कि उसे हिन्दू बना लिया जाए। परन्तु धर्मशास्त्र का
नाम लेकर सबने इन्कार करदिया। कहते हैं उसने काशी तक जाकर
इस बात का प्रयत्न किया कि किसी तरह उस कन्या को हिन्दू
बना लिया जाए। परन्तु एक भी परिषट् व्यवस्था देने को तैयार
नहीं हुआ। तब ये दोनों जगन्नाथपुरी गये। उन्होंने मन में सोचा
था कि श्री जगन्नाथ जी के चरणों में अपने हृदयों की पवित्रता की
साक्षी देकर परस्पर विवाह सूत्र में बंध जावेगे परन्तु पण्डों ने
उन्हे जगन्नाथ के दर्शन भी न करने दिये उल्टे उन्हे लात घूसों
से मार मार कर वहाँ से निकाल दिया।

इस पर उस युवक के मन में प्रतिर्हिंसा की आग भड़क
उठी। वह मुसलमान बन गया। और मुसलमान बनकर इस्लाम
का वह इस कदर अनुयायी बना कि सारे बंगाल को मुसल-
मान बनाने की बीड़ा उसने उठा लिया। हिन्दुओं को मुसलमान

बनाने के लिये उसने जो अत्याचार किये उनकी कल्पना नहीं की जा सकती। परन्तु पूर्वी बंगाल में मुसलमानों का बाहुल्य क्यों है। —इस घटना से उस पर प्रकाश पड़ता है यही कालीचन्द्र इतिहास में कालाचांद के नाम से विख्यात है।

इसी कालाचांद के समान पंजाब में एक काल मिहिर हुआ है जिसका हिन्दू नाम जयमल था। ब्राह्मणों ने उसके साथ जो अन्याय किया वह उसे जन्मभर नहीं भूल सका और अपने अन्तिम श्वास तक ब्राह्मणों से उस अन्याय को बदला लेता रहता उसकी कत्र के निकट ब्राह्मणों को जाने की आज्ञा नहीं है।

ये घटनायें स्वयं बोलती हैं। इन घटनाओं के प्रकाश में पाकिस्तान का मूल खोजिए।

मिशनरी धर्म

यह ठीक है कि कभी हिन्दू-धर्म भी मिशनरी धर्म रहा है, विदेशों में जाकर हिन्दुओं ने अपनी संस्कृति का प्रचार किया है और अहिन्दुओं को अपना अंग बनाया है। मीलों ऊँची हिमाच्छादित पर्वतों की चोटियों पर निर्जन मरुप्रदेशों में और घने बीहड़ जंगलों में बिना किसी रसद-प्रवन्ध के हमारे देश के धर्म प्रचारक गये हैं और विदेशियों को अपनी संस्कृति

का सन्देश दिया है। जिस लगन और उत्साह के साथ हमारे देश के धर्म प्रचारकों ने विदेशों में जाकर अपनी संस्कृति की विजय दुन्दुभि बजाई है, वह अनुपम है। उसी का यह परिणाम था कि जपान से मिश्र तक और चालि से यूनान तक भारतीय संस्कृति का विस्तार हुआ था। जावा, अनाम और कम्बोडिया हमारे उपनिवेश थे। वहाँ के राजा शिव, विष्णु ब्रह्मा और बुद्ध की पूजा किया करते थे। वेष्ट का शिव मन्दिर अंकोर का विष्णु मन्दिर और बोरोषुदूर का बौद्ध मन्दिर अभी तक उस सुन्दर भारत की झांकी दिखा रहे हैं। वहाँ के पत्थर पर खुदी हुई रामायण, गीता और महाभारत की कथायें अब तक हिन्दू धर्म की व्यापकता की सात्त्वि दे रही हैं। कभी श्रीकृष्ण हेलिपोडोरस ने वैष्णव धर्म अंगीकार करके वेसनगर में गरुड़ध्वजा की स्थापना की थी। यूची राजा कफस (कैडफाइस) के सिक्कों पर हाथ में त्रिशूल लिये शिव की मूर्ति मिलती है, कि वह शैव या परम माहेश्वर बन गया था।* कनिष्ठ और हविस्क विदेशी राजा थे, किन्तु वे हिन्दू समाज में घुल मिल गये थे। कनिष्ठ का राज्य उज्जैन और रांची से लेकर गोबी के मरुस्थल तक फैला हुआ था और जिस अनुपम उत्साह के साथ

* श्रीनगर के राजा मिहिरकुल ने मिहिरेश्वर देव की स्थापना की थी।

उसने धर्म प्रचार किया। उसको दृष्टि में रखते हुए यदि महाराज अशोक के पश्चात् किसी का नाम लिया जा सकता है—तो इसी कनिष्ठक का। उसने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) में जो ८०० फीट ऊँचा १३ मंजिल का स्तूप बनवाया था, यदि वह आज विद्यमान होता तो संसार के महान् आश्चर्यों में उस की गिनती होती। इसी प्रकार शक, हूण, यूची, यवन और भील आदि लोगों के कितने ही दल यहां आये और सब के सब हिन्दू धर्म के अंग बनते रहे। हिंदू समाज में घुल मिल कर वे सब इस प्रकार एकत्रित हो गये हैं, कि आज उनको अलग सत्ता के रूप में पहचानना भी असम्भव है।

प्रवेशो निषिद्धः

परन्तु जब से हिन्दू समाज ने गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था के स्थान पर जन्म मूलक वर्णव्यवस्था मानना शुरू किया है। और जिसमें ऊँचनीच की भावना ने घर कर लिया है तब से इसने “प्रवेशो निषिद्धः, क्वा चोर्ड लगा कर बाहर से आने वाले अन्य मतावलम्बियों के लिये अपने धर्म का द्वार बन्द कर दिया है और तभी से सछिद्र पात्र की की तरह हिंदू समाज लगातार चूता आ रहा है। हिन्दुओं में से निकल कर विधमीं बनते चले गये हैं। आज पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में मिलकर जो १० करोड़ के लगभग मुसलमान है

वे कहीं अरब ईरान अफगानिस्तान तुकिस्तान से तो नहीं आये। यदि कभी आये भी थे तो वे कुछ सौ लोग थे जो अंगुलियों पर गिने जा सकते थे, परन्तु वे कब के काल के ग्रास बन चुके और मिट्टी में मिल चुके। आज के ये अधिकाँश मुसलमान तो इसी भारतवर्ष की सन्तान हैं, हमारे अपने ही भाई बन्धु हैं जो कल हमसे किसी ऐतिहासिक उत्पात के कारण वा हमारी ही अपनी गलतियों के कारण विधर्मी बन गये हैं। मलकाने राजपूत, मूले, जाट, मेव, बोपरे मेमन और खोजे यह सब पहले हिंदू तो थे* आज इस सत्य से कौन इन्कार कर सकता है कि १०० में से ६५ मुसलमान भारत की ही मिट्टी की उपज हैं। उनके भी वही पूर्वज हैं जो हिन्दुओं के हैं उनका भी वही इतिहास है जो हिन्दुओं का है उनकी भी सभ्यता और संस्कृति वही है जो हिन्दुओं की है।

फिर आज के इन मुसलमानों में मैं हिन्दु विरोधी भावना क्यों उत्पन्न हुई? क्यों इन्होंने पाकिस्तान की माँग कर के इस परम पवित्र देश को खण्ड खण्ड करने का महापातक अपने सिरलिया? क्यों वे दो जातियों के सिद्धाँत(टू नेशन - ध्यूरी) के कायल बन गये? क्या इस्लाम को अंगी कार करने से मत-परिवर्तन के साथ साथ किसी की जाति भी परिवर्तित हो सकती है? क्या एक ही माता के पेट से जन्म लेने वाले

दो सो भाईयों का जाति पृथक् पृथक् हो सकती है ? कौन समझदार आदमी इससर्वथा तर्क विरुद्ध बात को मानने को तत्पर होगा । परन्तु हिंदुस्तान के मुसलमानों में यह पृथकता की भावना उत्पन्न हुई । वे राष्ट्र के द्वोही भी बने और पाकिस्तान की अनर्थकारी घटना भी घटी इसके लिये मुसलमानों को ग़ाली देने से काम नहीं चलेगा अग्रेज़ों ने फूट ढाल कर राज्य करने की नीति को अपना कर मुसलमानों में पृथकता की भावना उत्पन्न की यह कहना भी पूरा न्याय नहीं है । अंकुर पहले से ही निकलना था । अग्रेज़ों ने उस अंकुर को अपनी ओर मे खाड़ और पानी देकर पुण्यित और पल्लवित किया इससे अधिक दोष अग्रेज़ों को न देना केवल स्तरासर अन्याय है, अपितु आत्म प्रतारणा भी है । प्रश्न यह है कि वह अंकुर कहाँ से आया ? उस पृथकता की मनो-पृत्ति को आने का अवसर कैसे मिला ।

* स्वयं मिं० जिन्ना भी तो काठियावाड़ की खोजा जाति में उत्पन्न हुए थे । सर्वर्ण हिंदुओं के गुरुओं के स्थान पर किसी अन्य गुरु के सम्प्रदाय को मानने से अलग पड़ जाने वाले ये हिंदू ही है । खोजों के धार्मिक रीति रिवाज, सामाजिक, रीतियाँ दाय के नियम आदि बहुत कुछ हिंदुओं जैसे ही होते हैं उन में बहुतों के नाम भी हिंदुओं से मिलते जुलते हैं —

समाजशास्त्र और मनोविज्ञान

समाज शास्त्र का नियम है कि यदि किसी देश में रहने वाले दो मनुष्य समुदाय आपस में खानपान तथा पारस्परिक व्यवहार से इन्कार करते हैं, और उनमें ऊँच नीच की भावना होती है तो इसका का अनिवार्य परिणाम होता है—ईर्ष्याद्वेष और पारस्परिक वैमनस्य। जो हिंदू भय से लालच या धोखे से मुसलमान बन गये थे या अन्य किसी कारण से पतित हो गये थे उन्होंने उस समय बहुतेरा यत्न किया कि वे फिर हिंदू बना लिये जाये। परन्तु हिंदुओं ने न तो उन्हें अपने में मिलाना स्वीकार किया और न ही उनको अपवित्र समझकर उनका तिरस्कार करना छोड़ा। इसका परिणाम क्या हुआ ?

प्रत्येक व्यक्ति स्वाभिमान के साथ जीना चाहा है। यह उसका जन्म सिद्ध अधिकार है। और फिर मुसलमान तो यहाँ

जैसे भगवान जी, धर्मसी, पुरुषोत्तमलालजी, मोतीलालजी, हरजी, बालजी, भीना इत्यादि १८वीं तथा १९वीं शताब्दी में ख्वाजा जाति के कितने ही कुटुम्बों ने हिंदू धर्म पालना शुरू किया था। परन्तु हिन्दुओं ने उन्हें अपने में नहीं मिलाया फलतः वे हिंदुओं से अधिकाधिक दूर होते चले गये

—किशोरीलाल घ० मशरू वाला—

बिजेता बनकर आये थे। राजशक्ति उनके साथ थी। ऐसी दशा में उन मुसलमानों ने सोचा—यदि अपमानित जीवन से बचना है और स्वाभिमान पूर्वक जीना है तो उसका एक ही उपाय है। घटं मित्वा पटं छित्वा कृत्वा रासभरोहणम्—न्याय अन्याय जिस भी किसी तरह हो हम अपनी संख्या इतनी अधिक बढ़ाले कि बहुसंख्यक हिन्दू हमें कुचल न सकें हमारे साथमें अछूतों का सा बर्ताव न कर सकें। जो समर्थ हिन्दू अपने समान नीच वर्ण हिन्दुओं के साथ समता और बन्धुता का व्यवहार करने को तयार नहीं यदि हम अल्य संख्या में रहे तो हम विधर्मियों के साथ वही हिन्दु कैसे समता और बन्धुता का व्यवहार करेंगे? इसी आशंका के कारण लड़कियां देकर और जड़कियां लेकर, छल से कपट से, सत्म-दाम-दण्ड-भेद सभी उपायों से मुसलमानों ने अपनी संख्या बढ़ाने का प्रयत्न किया ज्यों ज्यों उनका मानसिक भय बढ़ता गया, त्यों त्यों उनकी क्रिया शीलता बढ़ती गई। और इधर जिन हिन्दुओं को किसी असर्वांगुल में जन्म लेने के कारण अपने ही समान धर्म भाइयों से न्याय के बदले अपमान और घृणा का शिकार बनाना पड़ा वे सहर्ष इस्लाम को अंगीकार करने लगे। जब तक हिन्दू रहे तब तक तो वे अछूत कहलाते रहे दुर दुराये जाते रहे। सेठ और परिणत उनकी छाया तक से बचते रहे परन्तु वही असर्वांग हिन्दु मुसलमान बनते ही—‘३ इथं शेख साहब सलाम ज्ञाले

कुम' कहकर सेठ जी से ऊंचे आसन पर बैठे। कुएं तालाब हस्पताल और पाठशाला आदि सब स्थानों से उनके लिए प्रवेशो निशिद्ध का बोर्ड हटा दिया गया। इस परिवर्तन ने सेठों और परिषदों के धांधली धर्म से घृणा के साथ साथ शत्रुता की भावना भी उत्पन्न की। और अनी लगातार बढ़ती हुई संख्या के साथ जहां मुसलमानों का अन्य विरचास गया। वहां हिन्दुओं से पृथक रह कर जीने की भावना भी बढ़ी। और इसी वृद्धिधगत पृथकता की भावना का परिणाम देश का विभाजन है। हजारों व्याख्यानों और सैकड़ों पुस्तकों से भी अब उनकी इस पृथकता की भावना के मानसिक संरक्षण बदला नहीं जा सकता। हिन्दुतान में जो बाकी चार करोड़ मुसलमान बच गये हैं उनके मन में यह पृथकता की भावना नहीं है यह नहीं कहा जा सकता। समय पाकर वह भी प्रकाश में आयेगी अभी चिनगारी राख से दबी हुई है। परन्तु उसका सारा आधार तो हिन्दुओं की जाति भेद और ऊंच नीच की भावना है।

क्या हिन्दुओं के धर्ममें त्रुटि है

हिन्दुओं के धर्म में कोई त्रुटि नहीं हैं हिन्दुओं के वेद और उपनिषदादि शास्त्र तो इतने उच्च कोटि के हैं कि आज भी संसार के विद्वान उनके आगे न त मरतक हैं। हिन्दुओं का

अध्यात्मवाद उनका तत्त्वज्ञान और उनकी संस्कृति इतनी अनुपम है कि संसार के बड़े सेवड़े विचारक उसकी ओर चिरकाल से आकर्षित होते रहे हैं। संसार के और देशों की तो बात जाने दीजिए इस भारतवर्ष में ही कितने मुसलमान हैं जो हिन्दुओं की सभ्यता और ईर्तहास से प्रभावित हुये हैं। जब इस देश में मुश्लिमों का सेक्का चलता था और उनको प्रताप सूर्य दिग्दिगन्त को आलो कित कर रहा था, इरलाम वी इस छद्मी के समय भी ऐसे अनेक मुसलमान कवि होगये हैं जिन्होंने हिन्दुत्व के रंग में छूट कर ऐसी भाव भीनी कविता की है कि केवल कविता को देख कर उनके मुसलमान होने की वल्पना तक नहीं की जा सकती। कुछ उदाहरण देखिये :—

बैरमखाँ के पुत्र और सम्राट अकबर के सेनापति अबुर्रहीम खाँ खानखाना (१५८३ से सन् १६२८ तक) उपनाम “रहीम” से गंग कवि ने एक हाथी को सूंड से धूल डालते देख कर पूछा —

‘धूरि धरत निज सीस पर कहो रहीम केहि काज’

इस पर रहीम ने उत्तर यिया —

‘जा रज मुनि पत्नी तरी सो ढूंढत गज राज’

और देखिए :—

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अबध नरेश ।

जापै विपदा परत है सो आवत यहि देश ॥

गहि सरनागति राम को भवसम्भर की नाथ ।

रहिमन जगत् उधार कर और न कछू उपाय ॥

जिहि रहीम चित आपनो कीन्हों चतुर चकोर ।

निशिवासर लागे रहो कृष्णचन्द्र की ओर ॥

रस्तमखाँ, उपनाम रसखान, नामक तुर्क (१५८३ से १६२८ तक) के ये पद तो साहित्य-रसिकों की जिह्वा पर रहते हे-

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूं पुर को तजि ढारैं ।

आठहू सिद्धि नवों निधि को सुख नन्द की गाय चराय बिसारैं ॥

नैनन सो रसखानि जबै ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारै ।

केतिक हू कलिधौत के धाम करीर के कुञ्जन ऊपर वारैं ॥

मानुष हौं तो वही रसखान बसौं संग गोकुल गाँव के ग्वारन ।

जो पशु हौं तो कहा बसु मेरौ चरौं नित नन्द की धेनु मंझारन ॥

जो खग हौं तो बसेध करौं मिलि कालिन्दीकूल कदम्ब की ढारन ।

पाहन हौं तो वही गिरि को जो किसी हरि छत्र पुरन्दर धारन ॥

बाहिद (१८ वीं सदी) का एक पद देखिये-

सुन्दर सुजान पर, मन्द मुस्कान पर,

बांसुरी की तान पर ठौरन ठगी रदे ।

मूरति बिशाल पर, कंचन की माल पर,

खंजन सी चाल पर, खोरने रुगीहे ॥

भौंहे धनु ऐन पर, लौने युग नैन पर,
 शुद्ध रस वैन पर बाहिद पगी रहे
 चंचल से मन पर, सांबरे बदन पर,
 नन्द के नन्दन पर, लगन लगी रहे ॥

ताज नाम की कवयित्री (सम्भवतः १८ वीं सदी) तो इन
 सभी से बाजी मार गई है—

सुनो दिल जानी मेरे दिल की कहानी,
 तुम दस्त हूँ बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
 देवपूजा ठानी औ नमाज हूँ भुलानी,
 तजे क़लमा कुरानि सब गुनानि गहूँगी मैं ॥
 सांबले सलौने सिरताज सिर कुल्लेदार,
 तेरे नेहदाघ मे निदाघ है दहूँगी
 नन्द के दुलारे कुरबान त्वाढ़ी सूरत ते,
 हौं तो मुरालानी हिन्दुआनी है रहूँगी मैं ॥

स्वयं अकबर हिन्दू बनने को तय्यार था और जब उसने वीरबल से अपने मन की मुराद कही तो वीरबल ने 'गधा कभी घोड़ा नहीं बन सकता' कह कर उसके मनसूबे पर पानी केर दिया था। उस प्रत्युत्पन्न मति और प्रतिभा धनी व्यक्ति वीरबल ने यदि उस समय यह परले सिरे की मूर्खता की बात न की होती तो क्यों आज संसार का पांचवा और इस्लाम का सबसे बड़ा पृथक राज्य—पाकिस्तान बनता। अकबर ने न केवल अपने

और अपने पुत्रों का विवाह हिन्दू राजपूत स्त्रियों से किया था, अपितु कई मुसलमान राजकुमारियों का विवाह भी उसने हिन्दू राजपूत सरदारों से करवाने का प्रयत्न किया था। राय मल्लिनाथ के लड़के कुंवर ऊगमल का विवाह सिध की नवें बनन्दनी जीन्दोली से कराया गया था। अकबर ने अपने पुत्र सलीम को हिन्दी सिखलाई थी; और अपने पोते खुसरो की द वर्ष की आय में भद्रन्त भट्टाचार्य के पास हिन्दी सीखने भेजा था। अकबर से लेकर औरंगजेब तक, वरन् बहादुर शाह तक किसी मुसलमान बादशाह का स्वतन्त्र नहीं हुआ था। (मुगलवश में सबसे पहले बहादुरशाह के बड़े बेटे फखरुद्दीन का खतना हुआ था और इसके तुरन्त बाद ही बहादुरशाह सन् १८५७ की राज्यक्रान्ति में कैद करके रंगून भेज दिया गया।) दारा ने तो हिंदूधर्म पर मुग्ध होकर उपनिषदों का अनुवाद तक कराया था। इससे बढ़कर उनकी हिंदू धर्म प्रति आस्था का और क्या प्रमाण चाहिये! परन्तु कितने दुःख की बात है, कि जात-पात के पचड़े में पड़े हुए हिंदू उन्हें अपने में मिलाकर पचा न सके।

हिंदुओं का धर्म जितना पवित्र है उनकी वर्तमान समाज रचना उतनी ही अधिक दूषित होगई है शारीरिक, बौद्धिक, और आर्थिक दृष्टि से हिन्दु संसार की अन्य किसी भी जाति से कम नहीं है। हिंदुओं में एकसे एक बढ़कर वैज्ञानिक धर्मात्मा दार्श-

निक, विचारक, व्यापारी, शूरवीर और योद्धा उत्पन्न होते रहे हैं। इन गुणों के रहते हुए भी इस जाति का संगठन क्यों नहीं हो पाता? इसका वास्तविक कारण इसकी जाति भेद मूलक सामाजिक व्यवस्था ही है इस्लाम में जहाँ सैकड़ों कमियाँ हैं वहाँ सामाजिक एकता एवं वन्धुत्वका एक बहुमूल्य गुण हैं जो अन्य सब कमियों को दबा कर इस्लाम का दुनिया में लगातार प्रचार करता जा रहा है हिन्दुओं के सम्पर्क के कारण अद्यपि कुछ मुसलमानों में भी ऊँचनीच की भावना विद्यमान है परन्तु उनके यहाँ वह एक बुराई मानी जाती है जब कि हिन्दुओं में छुआ छूत धर्म का अंग बनी हुई है सैकड़ों देव-दुर्लभ गुणों के रहते हुए भी यह एक ही घातक दुर्गुण ऐसा है जिसने लगातार १३०० साल से हिन्दु जाति को घद-दलित कर रखा है।

पराधीनता के कारण

क्या हमारी गुलामी अंग्रेजों के हिन्दुस्तान में आने से ही प्रारम्भ होती है? जाति-भेद ने इस हिन्दू जाति को अन्दर से जर्जर बना रखा था कि जो भी कोई आक्रमण कारी यहाँ आया वही सफल होता चला गया। क्या उन विदेशी और विधर्मी अकान्ताओं की तलवार का लोहा हमारी तलवार के लोहे से ज्यादा मज्जबूत था? क्या वे फौलाद के बने हुए थे और भारत-वासी मिट्टी के? नहीं इन में से एक भी बात नहीं। किर क्या

कारण हैं कि लंगड़ा तैमूरलंग और गडरिया नादिर शाह जैसे लुटेरे हिन्दुस्तान पर चढ़ कर आये और आंध्री की तरह लगातार बढ़ते चले गये ? क्या उस समय हिन्दुस्तान में धन नहीं था, क्या उस समय भारतीयों की वीरता कों जंग लग गयाथा, क्या उस समय इस देश की आत्मादीउन लुटेरे सैनिकों की संख्या से कम थी ? फिर क्या कारण है कि यह करोड़ों की जन संख्या का देश उन लुटेरों कों नहीं रोक सका ! इतिहास चिल्ला २ कर कहता है कि यह पिछले तेरह सो साल की गुलामी हिन्दुओं की अपनी कमज़ोरी का परिणाम थी । तभी तो हिन्दुओं के हथ में बारम्बार आई हुई लद्दमो पुनः पुनः अपहृत होती चली गई ।

अंग्रेजों ने भी भारत का राज्य मुगलों से नहीं, बरन दो हिंदु संघों से लिया था । उस समय पंजाब सिक्खों के पास था और बाकी सारा हिन्दुस्तान मराठों के पास । कहने को उस समय दिल्ली के सिहांसन पर बादशाह बहादुर शाह का शासन था परन्तु उसकी अवस्था एक कैदी से बढ़ कर नहीं थी । उसे मराठों को टैक्स देना पड़ता था उस समय हिन्दुओं ने राजनीतिक रूप से इस्लाम को वेशक परास्त कर दिया था, परन्तु सामाजिक रूप से इस्लाम बराबर बढ़ता रहा है । वह बराबर बढ़ता रहा—मराठों के राज्य में भी और सिक्खों के राज्य में भी । प्रकृति ने बार बार अवसर दिया कि हिन्दू संभल जाएं और जाति भेद को मिटा कर एक ‘हिन्दू राष्ट्र’ का सङ्गठन करें । परन्तु हम

अपनी जात-विरादरी के वंधन से बाहर नहीं निकल और पाये देश फिर गुलाम का गुलाम बना रहा।

आइये कुछ इतिहास के पन्ने पलटें—१. सातवीं शताब्दी की बात है। सिन्ध नरेश दाहर के पिता चच्च ने पण्डे और पुरोहितों के कहने से सिंध के जाटों, मेडों, लुहाणों और भीलों सबको शूद्र करार दे दिया। उनके लिये थोड़े की सवारी, शस्त्र धारण करना, सुंदर वस्त्रा-भूषण पहनना तथा सेना में भरती होना तक निषिद्ध कर दिया गया। इस भेद भाव के कारण उन में राजा के प्रति द्वेषाग्नि भढ़क उठी। जब अनुकूल अवसर पाकर मुहम्मद बिन कासिम ने आक्रमण किया और केवल ७०० सैनिकों के साथ हिन्दस्तान का द्वार खटखटाया। तो इस आकस्मिक आक्रमण से दाहर के हाथ पांच फूल रखे। उसने देश की रक्षा के नाम पर सारी प्रजा को ललकारा। उस समय ब्रह्मणों ने कहा हम तो आपकी विजय के लिये मन्दिर में जाकर देवता से प्रार्थना करते हैं, युद्ध करना हमारा काम नहीं। वैश्यों ने कहा — हमसे रुपया दैसा लेलो और खाद्य सामग्री जितनी चाहो लेलो परन्तु युद्ध हम नहीं जानते। शूद्रों ने कहा हमें क्या चाहे किसी का राज्य हो हम तो दास के दास रहेंगे। “कोउ नूप होय हमहि को हानी” “चेरी छाँड़ि हो उन रानी” बस लड़ने के लिये थोड़े से ज्ञात्रिय निकले। उनमें से भी आधी स्त्रियां थीं, कुछ बच्चे थे, कुछ बूढ़े थे और कुछ रोगी थे जो लड़ाई के सर्वथा अयोग्य थे। परिणाम

क्या हुआ ? दाढ़र की हार हुई । वह युद्ध में मर गया और उसकी दोनों लड़कियां पकड़ कर अरब के खलीफा के अंतःपुर में पहुंचाई गईं ।

२. शेरशाह सूरी के समय रियाडी के एक साहसी व्यक्ति ने जिसका नाम था हेमचन्द्र चौधरी पर जो इतिहास लेखक की कृपा से हेमू बक़काल के नाम से विख्यात है अवसर पाकर दिल्ली की मुगल सेनाओं पर आक्रमण कर दिया और उन्हें हराकर स्वयं दिल्ली के सिंहासन पर बैठ गया । उस समय अकबर छोटा सा बालक था । वैरमखां उसका सेनानी भी था और सेनापति भी । दिल्ली से सैक़ड़ों मील दूर जब वैरमखां ने दिल्ली के सिंहासन के छिन जाने का समाचार सुना तो उसके तन मन में आग लग गई । वह गुस्से में भरकर और अपनी विशाल चतुरंगिनी सेना सजाकर दिल्ली पर पूर्ण अधिकार करने के लिये चला । इधर हेमचन्द्र चौधरी ने देखा कि उसकी अपनी सेना बहुत थोड़ी सी है और दिल्ली को सेना में मुगल सैनिकों का ही बाहुल्य है । युद्ध में मुगल सेनाओं की राजमत्ति पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं है । यही सोच कर उसने राजपूताने के राजाओं को एक एक करके चिट्ठी लिखी—“परमात्मा की असीम अनुकम्पा से कहीं सदियों के बाद दिल्ली पर हिन्दुओं को राज्य करने का सौभाग्य प्राप्त

हुआ है। अब हम सबका करते व्य है कि सब मिल का इस हिन्दु राज्य की रक्षा करें। मुझे राज्य करने का प्रलोभन नहीं है। इस सिंहासन पर तो मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्र के बंशज आप जैसे सूर्यवंशी राजाही शोभित होंगे। मैंने तो केवल उचित अवसर का लाभ उठाकर हिन्दुत्व का प्रतिनिधि बनकर यह हिन्दुत्व की पताका यहां दिल्ली में लहरा दी है। आप अपनी सेनायें लेकर यहां आये और हम सब मिलकर वैरम खां की सेना को हटाकर इस हिन्दुत्व की पताका की रक्षा करें।

इसका उत्तर क्या दिया गया। उन राजपूत राजाओं ने क्रोधाविष्ट होकर उस हेमचन्द्र चौधरी को लिखा—अबे बनिये बक्काल! नीचवर्ण होकर अपने से उच्च वर्ण के हम राजपूतों को अपनी सेना के साथ मिलकर लड़ने का निमंत्रण देवे हुए तुझे लज्जा नहीं आती? तू क्या जाने लड़ाई किस तरह लड़ी जाती है—बणिकपुत्र जाने कहा गढ़ लेवे की घात। पहले यह बता कि बनिये को राज्य करना कौनसे शास्त्र में लिखा है। तू ने बनिया होकर जो राजगद्वी पर पांच रस्सा है और इस तरह हम उच्च वर्ण के ज्ञात्रियों का अपमान किया है पहले इस पाप का प्रायश्चित कर।

यदि वैरमखों की विशाल सेना के सामने हेमचन्द्र चौधरी हार गया और आया हिन्दु राज्य फिर वापिस चला

गया तो यह दोष किसका है। और फिर जो राजपूत ज्ञात्रिय अपने से नीच वर्ण वैश्य के साथ मिल कर शत्रु से लड़ने में अपना अपमान समझते रहे उन्हीं राजपूत राजाओं को पीछे मुराल बादशाहों का दास बनने में और उन्हे अपनी कन्यायें देने में न तो अत्यन्त अपमान प्रतीत हुआ और न ही लड़ा आई !

३. अहमदशाह अब्दाली ने जिस समय भारत पर आक्रमण किया उस समय दक्षिण से लेकर उत्तर तक मराठों का भगवा ध्वज लहराता था। सदाशिवराव भाऊ ने अपनी विशाल चतुरंगणी के साथ पानीपत में अब्दाली का मुकाबला किया इतिहास में वह पानीपत के तीसरे युद्ध के नाम से विख्यात है।

पानीपत के मैदान में सदाशिवराव भाऊ और अब्दाली की सेना में पहले दिन ही मराठों ने पठानों को लोहे के चने चबवाये कि उन्हें नानी याद आगई। मराठों की वीरता को देख कर अब्दाली दंग रह गया, उसके छक्के छुट गये। आया था हिंदुस्तान को विजय करने का स्वप्न लेकर, यहां पहले ही मोर्चे पर लेने के देने पड़ गये। उसे सहीसलामत पहुंचने की भी आंशा नहीं रही उसने युद्ध क्षेत्र में ही अपने घोड़े से उत्तर कर ईश्वर से प्रार्थना की -या परवर दिगार अगर इस बार किसी तरह खैरियत से अपने बतन पहुंच जाऊं तो फिर भूल कर भी कभी इस काफिरों के मुल्क की ओर नजर

न करूँ ये तो बड़े जालिम हैं।

वह लौटने की तयारी कर ही रहा था कि अचानक उसी रात उसने मराठों की छावनी में सैकड़ों-सहस्रों स्थानों पर आग जलती हुई देखी। वह समझ न सका की यह माजरा क्या है क्या मराठे भयभीत हो गये हैं और अपने तम्बुओं को आग लगा कर यहाँ से भाग रहे हैं। पर वे क्यों भागने लगे मैदान तो आज उनके हाथ आ रहा है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि हमें धोखे में डालने के लिये यहाँ अपने कैम्पों में आग लगा कर अधेरे में किसी और स्थान पर मोर्चा बना रहे हैं अपने सन्देह की निवृत्ति के लिये उसने अपना गुप्तचर भेजा। गुप्तचर ने वापस आकर समाचार दिया - जांपनाह इन मराठों में छूआङ्गात बहुत है, ये एक दूसरे के हाथ का भोजन नहीं खाते अब यद्ध से निवृत्त होकर अपने २ चूल्हों में यह अलग २ रोटी पका रहे हैं स्थान २ पर उन्हीं हजारों चूल्हों की यह आग दीख रही है और कोई बात नहीं है।

अच्छा यह बात है - अब्दाली को ढाढ़स बंध गया। गई हुई हिम्मत फिर वापिस आ गई। उसने अपने सिपहसालार को उसी समय बुझाया और अपनी सेना को अक्रमण करने के लिये तयार करने का आदेश दिया। सिपहसालार अब्दाली के मुँह की ओर देखता रहा -- इसे

हो क्या गया है। रात का समय है। सारे सैनिक थके पड़े हैं। दिन भर मराठों की मार खाते २ अब कहीं सुस्तान का समय मिला है, और यह कहता है कि सेना को हमले के लिये तयार करो। बात क्या है, कहीं निराशा के कारण बादशाह को मतिविभ्रम तो नहीं हो गया है।

अब्दाली ने सिपहसालार के चेहरे पर अंकित भाव पढ़ लिया और उसके कंधे पर हाथ रख कर कहने लगा—सामने देखो वह क्या हैं? जगह २ आग चमक रही है न मैंने अभी गुप्तचर को भेज था उसने मुझे आकर बताया है कि मराठे अलग २ चूल्हों में अपनी अलग रोटी पका रहे हैं और सिपहसालार क्या तुम नहीं जानते कि लोग आपस में इकट्ठे बैठ कर रोटी भी नहीं खा सकते, उनको हराना कोई बड़ी बात नहीं हैं।

हुआ क्या? अब्दाली की सेना ने उसी समय मराठों पर धावा बोल दिया। कोई मराठा आग जला रहा था, कोई आटा गूंध रहा था कोई दाल छौंक रहा था कोई रोटी सेक रहा था और कोई खा रहा। लाखों सैनिक में से दो सहस्र भी अब्दाली का मुकाबला करने को तयार न हो सके। मराठा सेना में भगदड़ पड़ गई। भाऊ मरा गया और मराठों का शक्ति सूर्य सदा के लिये अस्त हो गया।

सन्तरे की फाँके

हिन्दु समाज में सांकृतिक हष्टि से वेशक कुछ समानता दीखती हो, परन्तु इस जाति भेद के कारण हमारी सारी जाति अन्दर सन्तरे की फाँकों की तरह जुदा २ हैं। अकेले ब्राह्मणों में हीं दो हजार अवातन्त्र भेद हैं। केवल सारस्वन ब्राह्मणों की ही ४६६ शाखाएँ हैं। त्रित्रियों की ६९० हैं। वैश्यों और शूद्रों की तो और भी अधिक हैं। गुजरात में दस- दस और बारह बारहों की अलग विरादरियां हैं। केवल सूरत शहर में ही वैश्यों के ६५ से अधिक भाग हैं। उड़ीमा के कटक ज़िले में बैठ कर छोटे छोटे मटके बनाने वाले कुम्हारों की विरादरी उन कुम्हारों की विरादरी से अलग हैं जो खड़े होकर बड़े २ मटके बनाते हैं उनका आपस में रोटी बेटी व्यवहार नहीं होता। इसी प्रकार जो गवाले कच्चे दूध से मक्खन निकालते हैं वे उन गवालों से बेटी व्यवहार नहीं करते जो दही से मक्खन निकालते हैं। जो धनुर में पुराने जूतों की मरम्मत करने वाले और नये जूते सीने वाले चमारों की विरादरी अलग २ है। भारत के कई भागों में जो मूँछेरे अपने जाल दायें से बांए को बुनते हैं वे बांए से दांए बुनने वालों से अपने आप को अलग समझते हैं सभी जातियों उपजातियों में इसी प्रकार के मनोरंजक इतिहास की खेज की

जा सकती है, पर उसके विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है।

मानवता की विडम्बना

इत जाति-भेद की परम्परा से सुस्त हिन्दु समाज में अछूत अभी तक इतनी अधिक घृणा का पात्र समझा जाता रहा है कि उससे भानवता तक के अधिकार छीन लिये गये हैं। बड़ से बड़ा प्रबुद्ध हिन्दू भी इस घृणा को तिजाँजलि नहीं दे सकता “स्त्री शूद्रो नाधीयताम्” कहकर स्त्रियों को और शूद्रों को पढ़ने लिखने से वन्चित कर दिया गया; यदि कोई शूद्र कहीं से वेदमन्त्र सुन ले ‘त्रपु जतुभ्यांकर्णपूरणम्’ कहकर हमारे धमो-चार्य वह आदेश दे गये कि इस पाप के प्रायशित वरूप उसके कान में सीसा पिघला कर डाल दिया जावे। यदि शूद्र मन्त्र का उच्चारण करले तो उसकी जिह्वा काट दी जावे। कहीं कोई शूद्र किसी दूर देश में जाकर अपनी जाति छिपाकर क्लंक से बच न जाये इसलिये उसके माथे पर या कन्धे पर गरम लोहे से दागा दिया जावे। यदि कोई द्विज किसी शूद्र को आग दे या पानी दे या चावल दे तो उसे पतित और जाति बहिष्कृत समझा जाए यदि कोई ब्राह्मण सामने से आरहा हो तो अछूत एक दम उसके लिये रास्ता छोड़ दे और दस क्रदम दूर से ही धूल में लोट कर

उसे प्रणाम करे। यदि ऐसा न कर सके तो ब्राह्मण के नौकर उसे पीट पीट कर मार डाले। यदि कोई सर्वर्ण हिन्दू सङ्क पर आ रहा हो तो अछूत का कर्त्तव्य है कि वह घुटनों के बल बैठ जावे और जब तक वह पास से गुजार न जावे तब तक न तो उस कीओर देखे और नहीं सिर उठाये—उसकी दृष्टि पड़ने से कहीं बहश्रध्न न हो जाए इस लिये। इस प्रकार धर्मविजियों ने अपनी अतिरिक्त पवित्रता के मिथ्या गर्व को अच्छुरण रखने के लिये अछूत नाम के एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जो कुत्तों तक से गया गुजरा समझा गया।

इस अतिरिक्त पवित्रता की भावना के ही कारण एक ओर जहां ब्राह्मण अपने को परमात्मा का अंश समझ कर पृथ्वी के देवता बन गये, वहां उसी भावना की पुष्टि के लिये कुछ लोगों को अछूत कह कर उनसे पशुओं से भी निम्नकोटि का व्यवहार किया जाने लगा। ब्राह्मण 'आत्मानव बन गये, अछूत 'अप-मानव। इन 'अति' और 'अप' दो उपसर्गों में ही हिन्दू जाति का आदि और अन्त है। इन दो उपसर्गों के रहते 'मानवता' का स्थान कहाँ है ?

जब महाराष्ट्र के पच्छम में हिंदू राज्य के अप्रतिम कर्णधार महाराज शिवाजी ने अपने अद्भुत रण-कौशल से स्वतंत्र हिंदू-राज्य की स्थापना कर ली और राज्याभिषेक का प्र जन

किया तो कोई ब्राह्मण वैदिक रीति से संस्कार करवाने को तथ्यार नहीं हुआ। क्योंकि उस समय के ब्राह्मण शिवाजी महाराज को अछूत समझते थे। उनका कहना था कि कलियुग में काई त्रिय हो ही नहीं सकता। आखिर एक नागभट्ट नामक ब्राह्मण को बहुत सा रूपया देकर बड़ी कठिनता से वैदिक मंत्रों द्वारा राज्याभिषेक की विधि सम्भव करवाने के लिये तथ्यार किया गया। इस अभिषेक के बाद असन्धट ब्राह्मणों के प्रसन्न करने के लिये महाराज शिवाजी ने दान का ढेर लगा दिया। ६ जून सन् १६७४ को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ, और इस उपलक्ष्म में उन्होंने अपना राज्याभिषेक सम्बत् चलाया। पर उनके परलोकनगमन के पश्चात् जब राज्य की बागडोर ब्राह्मण पेशवाओं के हाथ में आई तो उन्होंने वह सम्बत् बंद कर दिया और उसके स्थान पर मुसलमानों के ढंगका फसली सम्बत् चलाया।

शिवाजी के दूसरे पुत्र के वंशज कोल्हापुर में राज्य करते थे। म्बर्गीय शाहू महाराज ने अपने पुरोहित को वैदिक विधि संस्कार करवाने की प्रेरणा की, पर उसने ऐसा करने से छकार कर दिया, क्योंकि वह कोल्हापुर के राज वंश को शूद्र समझा था। प्रतिक्रिया स्वरूप महाराज ने आज्ञा दी कि जो ब्राह्मण हमें शूद्र समझते हैं, वे हमारे राज्य से निकल जाएं,

क्यों कि शास्त्र की हृषि से शूद्र के राज्य में ब्राह्मण का रहना निषिद्ध है। इस पर अनेक ब्राह्मण राज्य छोड़ कर चले गये।

इतना ही क्यों, एक समय था जब कोई शूद्र ब्राह्मण का चरणामृत लिये बिना भोजन नहीं कर सकता था। सर प्रफुल्लचन्द्र राय अपने वचपन में देखा करते थे कि कलकत्ता की सड़कों के किनारे पर नीच जाति के सैकड़ों बालक लाइन बांधे खड़े रहते थे कि कोई ब्राह्मण उधर होकर गुजरे तो उसके पांवों का धोवन लेकर धर जाये जिससे उनके माता पिता उस चरणामृत को पीने के बाद भोजन कर सकें।

पुराने हिंदू कानून के अनुसार ब्राह्मण यदि किसी की हत्या भी कर दे तो भी उसे फांसी नहीं मिल सकती थी। ब्राह्मण स्वयं तो अवध्य है ही, उसका वध करने वाले को ब्रह्म हत्या का पाप लगे सो अलग। ईस्ट इण्डिया कम्पनी भी सन १८५७ तक इसी कानून को मानती रही। यही क्या कम गन्तीमत है कि आज के ब्राह्मणों ने यह आनंदोलन नहीं किया कि महात्मा गांधी जैसी पवित्रात्मा की हत्या करने वाले नाथूराम विनायक गोडसे को फांसी न दी जाए, क्योंकि वह ब्राह्मण है यदि उसे फांसी दी गई तो राष्ट्रीय सरकार पर, और सरकार के जनता की प्रतिनिधि होने के कारण सारे राष्ट्र पर ब्रह्म हत्या का पाप

लगेगा ।

ब्राह्मण यदि मानवोत्तर थे तो तो इन अछूतों की मानवेतरता भी कहीं हूँडने नहीं जाना पड़ेगा । पेशवाओं के समय जिस सङ्क पर हिंदू सवर्ण चला करते थे उस पर अछूतों को चलने की आज्ञा नहीं थी, ताकि उनकी छाया से सवर्ण हिंदू भ्रष्ट न हो जावें । शूद्रों को अपनी कलाई पर या गले में एक कला डोरा बांधना पड़ता था जो सवर्ण हिंदुओं के लिये रेड सिगनल का काम करता था—खवरदार कहीं इसे छू मत लेना । पूना में राजाज्ञा थी कि प्रत्येक अछूत अपनी कमर से भाड़ बांध कर चले, और भूमि पर उसके पैरों के जो चिन्ह बने उन्हें मिटाता जावे, ताकि कोई हिन्दू उन पद-चिन्हों पर पैर रख ने से अपवित्र न हो जावे । उसी पेशवाओं की राजधानी पूना में अछूतों को अपने गले में हांडी बाँध कर चलना पड़ता था । यदि उन्हें थकना हो तो वे उसी हांडी में थूक सकते थे । उनके भूमि पर थूकने से यदि किसी हिंदू का उस पर पांव पड़ जाए तो उसके अपवित्र होने की आशंका थी । दक्षिण भारत में अनेक स्थानों पर अछूतों को जानवरों की तरह अपने गले में घरटी लटकानी पड़ती थी जो उनके रास्ते में चलने पर बजती थी । यह इस बात की निशानी थी कि अब अछूत सङ्क पर आ रहा है सवर्ण लोग उसकी छाया से बचने का प्रबन्ध कर ले । यदि सङ्क पर बच्चे खेल रहे हों तो तुरन्त उन्हें छिपाकर

वंद कर लिया जावे, ताकि अछूत छाया न पड़ने पावे

इस प्रकार इस जाति-भेद ने मनुष्य २ में भेद डाल कर जो मानवता कातिरस्कार किया है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, एक और ब्राह्मण “भूदेव” बनकर देवताओं की तरह पूजित हुए तो दूसरी ओर शूद्र में इतनी हनि भावना भर गई कि उसमें आत्म सम्मान का भाव तक नहीं रहा।

मलाबार में नम्बूद्रि ब्राह्मण यदि नायर नामक शूद्र जाति की स्त्रियों को रखेन्त बनाकर रखे तो इसमें नायर लोग अपनी बड़ी प्रतिष्ठा समझते हैं। वहाँ की यह प्रथा है कि यदि किस नम्बूद्रि ब्राह्मण को अपनी जाति में कन्या न मिले तो वह किसी नायर कन्या के साथ रह सकता है। परन्तु यह साथ रहने भी कैसा विचित्र है। वह नियम-पूर्वक विवाह नहीं कर सकता। लड़की अपने घर पर रहती है और लड़का अपने घर। नम्बूद्रि युवक रात को उसके घर जाता है और प्रातःकाल सूर्य निकलने से पहले अपने घर आ जाता है। वह उस नायर की लड़की के साथ उसके घर पर खान पान बिलकुल नहीं कर सकता। रात के समय सन्तान उत्पन्न कर सकता है। पर दिन के समय उस का मुँह भी नहीं देख सकता। इस प्रकार के विवाह को वहाँ की भाषा में ‘सम्बधम् कहा जाता है। कहते हैं कि एक बार एक नम्बूद्रि ब्राह्मण को प्यास लगी। नायर लड़की के घर के तो

किसी बर्तन में वह पानी पी नहीं सकता था। प्यास जोर की लेगी थी। अचानक उसे शास्त्र का बचन याद आया। रत्न और स्त्रीमुख कभी अपवित्र नहीं होते। उसने नायर कन्या से कहा—तू अपने मुँह में पानी भर कर मेरे मुँह में डाढ़ दे लड़की ने वैसा ही किया इससे ब्राह्मण की प्यास भी बुझ गई और धर्म भी बच रहा।

उसी मलावार के उन्नितरी जाति में यह प्रथा है कि प्रत्येक कन्या का पहला विवाह नम्बूद्रि ब्राह्मण से होगा बाद में किसी अपनी जाति के युवक से। कन्या को पहले चार दिन तक किसी ब्राह्मण से विवाह करना पड़ता है। चार दिन रात तक उस पुरुष के साथ उसे एक कोठरी में रहना पड़ता है और नगन होकर उसकी तेल की मालिश करनी पड़ती है। इसके पश्चात् वह ब्राह्मण भेट-पूजा लेकर चला जाता है। तब कही जाकर उस कन्या का विवाह उन्नितरी जाति के युवक के साथ होता है।

आंध्र न वहा, फरियाद न कर !

मलावार के उत्पलम् गांव में इज्जवा नामक नीच जाति का एक शिवरामन् नाम का बालक एक रुपये का हिन्दू की दुकान पर नमक खरीदने गया। उसने मलयालम् भाषा में 'उप्पू' मांगा। मलावारी प्रथा के अनुसार केवल सर्वर्ण हिन्दू ही नमक

को 'उप्प' कह सकते हैं। शूद्र होने के कारण शिवरामन् को 'पुली चुहून' शब्द का प्रयोग करना चाहिये था। इसलिये उस सर्वर्ण हिन्दू द्रुकानदार को क्रोध आया। उसने लड़के को लात-धूंसों से मारना शुरू किया। ज्यों २ वह मारता गया त्यों २ बालक की प्रतिकार हीनता की वृत्ति को देख कर उसका गुस्सा और बढ़ता चला गया। हायरे अपुरुष का क्रोध ! आखिर वह तब तक उस बालक को मारता ही रहा, जब तक उसके प्राण-पखेरू सांस के पींजरे को छोड़ कर उड़ नहीं गए।

कुछ वर्ष पहले अनावृष्टि के कारण जब गुजरात में अकाल पड़ा और लोग दाने २ को मेहताज हो गये, बिना चारे के पशु भूखे मरने लगे और आदमी की जात कुत्ते बिल्ली से भा सस्ती हो गई तब किसी ने सुमाया कि अनावृष्ट का मूल कारण इन्द्र देवता का कोप है। बहुत दिनों से इन्द्र देव को कोई बलि नहीं मिली, इसलिये वे रुष्ट हो गये हैं। अब देवता को प्रसन्न करने का उपाय यह है, कि किसी की बलि दी जाए। बलि भी किसी पशु की नहीं, किसी मनुष्य की ही शुभ होगी और मनुष्यों में भी यदि स्त्री हो, और वह भी आंख-नाक कान आदि सब अंगों से पूरी कोई सुन्दर कुमारी कन्या हो तो इससे अच्छी और बर्लि नहीं हो सकती। क्योंकि देवता पर अन्धात पुष्प ही चढ़ाया जाता है। आखिर धर्म प्रेमी लोगों ने वृष्टि के देवता को रिभाने के लिये एक सर्वगुणोपेत अखण्डित शूद्र

कन्या को पकड़ कर एक पेड़ से बाँध दिया और उसके चीखने-चिल्हाने पर भी उसे जवर्दस्ती आग की भेंट कर दिया।

अप्रतिम हरिजनोद्धारक महात्मा गांधी के जिस गुजरात में उपरोक्त घटना घटी उसी गुजरात के उत्तरी भाग में बड़ौदा राज्य की महेसाबा तहसील में हरिजनों को किराये की मोटर में नहीं बैठने दिया जाता। जब इसी नेत्र के जामला गाँव में एक हरिजन मोटर पर बैठने लगा तो उसे मार खानी पड़ी। यह किसी अदालत तक पहुंचा, किसी तरह समझौता भी हो गया, परन्तु जब हरिजनों ने अपमान से तंग आकर मोटर पर बैठना शुरू कर दिया तो गांव के उच्च वर्ण हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार करके हरिजनों को मट्टा, मजूरी, नमक-मिर्च और आटा दाल, चावल व गोरा राशन तक देना बन्द कर दिया। विचारे हरिजन तंग था गये। पिछले डेढ़ महीने से यह खींचा तानी अभी यह चल ही रही है।

इसी होली की घटना है। अजमेर मेरवाड़े के खानपुरा ग्राम के कुछ रेगड़ ढोल बजा कर होली गा रहे थे और उत्सव मना रहे थे। गांव के रावतों ने इस पर एतराज किया—‘वाह, जब तुम भी ढोल बजाने लगे तो फिर हम क्या बजायेंगे’ जब रेगड़ों ने ढोल बन्द नहीं किया तो रावतों ने उन पर लाठियों से सामूहिक आक्रमण कर दिया। कितने ही रेगड़ों के सिर खिल

गये। अन्त में गुस्सा निकला ढोल पर। जब तक रावतों ने उसे बिलकुल फोड़ नहीं दिया तब तक उन्हें अपनी नाक नीची होने का अन्देशा बना रहा।

रियासत इंदौर के तेजपुर गांव का निवासी मेघवंशी किसी काम से उदयपुर के दुगोरपट्टा नामक गांव में गया। उसके पैरों और हाथों में चांदी के कड़े थे। और कानों में उसने सोने के मोती पहने हुए थे। कोट में चांदी के बटन लगे हुए थे। गांव के गूजरों से उसका इस प्रकार सोने, चांदी के आभूषण पहनना महन न हुआ। लाठियों से उसे पीटा और कहने लगे- हमारे पहनने के ये सोने चांदी के आभूषण तूने क्यों पहने?

हरिजनों की बात तो जाने ही दीजिये। उनमें जाकर सेवा कार्य करने वाले समाज सुधारकों की भी खैर नहीं। अभी कुछ दिन पहले संयुक्त प्रांतीय असेम्बली के प्रमुख सदस्य तथा लखनऊ हरिजन सहायक शिक्षण शिविर के संचालक बाबा राधवदास एम० एल० ए० ने समाचार पत्रों में एक समाचार छपवाया था, जिसमें यह बताया गया था कि बस्ती जिले के बांसी इलाके में पूज्य बापू-महात्मा गांधी-के निकट-वर्ती श्री प्रभुदयाल जी विद्यार्थी हरिजनों और पिछड़ी हुई जातियों में काम कर रहे थे कि उस इलाके के जामीदार के

पुत्र विश्वम्भरनाथ तिवारी ने २६ मार्च १९४९ को कुछ गुण्डों को बुला कर उन्हें जान से मरवा डालने का प्रयत्न किया। परंतु तीव्र घातक चोट ल ने के बाद भी भाग्य से विद्यार्थी जो बच गये हैं इस घटना से “चौराणां च खलानाम्च परद्रव्यापहारिणाम् । अभिप्रायान सिध्यन्ति तनेदं वर्तते जगत्” की उक्ति जहां चरितार्थ होती है वहां यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अभी तक हिन्दू जाति में किस प्रकार की मनोवृत्ति काम कर रही है।

जाति-भेद एक क्रम बद्ध अब्लूत पन है इसके कारण सब हिन्दू एकदूसरे के लिए अब्लूत हैं। अन्तर अंश का हैं कोई थोड़ा अब्लूत है कोई अधिक। किसी के यहां बात चीत कर सकते हैं उसे छू सकते हैं, किन्तु आप खाना नहीं खा सकते। किसी के यहां आप पक्की रसोई तो खा सकते हैं, किन्तु कच्ची रसोई नहीं खा सकते। किसी के यहां आप कच्ची रसोई खा सकते हैं किन्तु भात नहीं खा सकते। पहाड़ों में तो अनेक स्थानों पर यहां तक रिवाज है कि किसी पास-पड़ोसी की तो बात ही अलग है अपनी घर बाली के हाथ का बनाया हुआ भात भी नहीं खा सकते। और किसी के यहां आप भात तो खा सकते हैं किन्तु बेटी व्यवहार नहीं कर सकते। इन सब से भी आगे वह श्रेणी है जिसके हाथ का खाना या पानी पीना तो दूर रहा, आप

उन्हें कूर्भा नहीं सकते, जिनके दर्शन यज्ञा या मात्र से आप घृणा करते हैं एक और आप मानव मात्र को समानाधिकार का नारा लगाते हैं और दूसरी और इस जाति-भेद जन्म-पारस्परिक घृणा ने सारे हिन्दु समाज का ढाँचा इतना विक्षीण कर दिया है कि उसे दुबारा ठीक करके एक राष्ट्र की भावना पैदा करना असम्भव होगया है आज दशा यह है कि खान-पान व्याह शादी और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हितों की दृष्टि से एक जाति दूसरी से उतनी ही भिन्न है जितना कि एक चीनी एक फ्रांसीसी से । वरन् कहना चाहिए जितना एक चिड़िया मार का एक जानवर दूसरे जानवर से होता है इन विभिन्न जातियों में पारस्पारिक प्रेम का लव-लेश भी नहीं। एक दूसरे के प्रति अपमान जनक कहावतें बनी हुई हैं, और उन कहावतों के आधार पर ही प्रायः हमारे दैनिक जीवन के कार्य कलाप संचालित होते हैं प्रत्येक जाति के सम्बंध में इस प्रकार की कहावतें सुनी जा सकती हैं । कुछ नमूने देखिए:—

‘बम्मन की परतीत प्सो सुख सोया नहि कोय
बलिराज्ञ हरिचन्द्र को दियो राज इन खोय ।
दियो राज इन खोय रिपु ताहि बनि आई ।
सीय जगत की मात ताहि जाय चुराई ।
कहं गिरधर कविराय जगत के हैं ये थम्मन ।

कोटि करो उपाय दम्भ नहिं चूके बम्मन ॥

‘अकात बगड़ से उपजे, बूरा बम्मन से होय’

तगा ततैया तूमरा और तरहे का तेल ।

ये मीठे नहीं होवगे कितना ही गुड़ पेल ।

खूलों के बच्चे प्रायः कहते सुने जा सकते हैं:-

कायस्थ बच्चे, कभी न सच्चे,

औरः- खत्री पुत्रम्, कभी न मित्रम् ।

जब मित्रम् नब दगम दगा ॥

दरजी, सुनार और अन्य शिल्पियों के बारे में:-

वेश्या, बन्दर, अग्नि, जल, छुरी, कटक, कलार ।

ये दस नाहिं आपने सूजी सूचा सुनार ॥

(सूजी = दरजी)

बनियों के लिए कहावत प्रसिद्ध है:-

‘तुलसी कभी न कीजिये वणिकपुत्र विश्वास ।

ग्रीति-वचन और धन-हरण फिर दासन का दास ॥’

‘जिसका बनिया यार, उसको दुश्मन क्या दरकार ।’

संस्कृत के कवियों ने जहां ‘नराणां न पिठोधूर्तः’ कहा है
वहां हिन्दी वाले भी पीछे नहीं रहे : कहावत प्रसिद्ध है-

‘नाई ब्राह्मण कूकरा जाति देख गुराये ।’

और जाटों के सम्बंध में लीजिये-

‘जाट, जुलाहा, जोगना, जागाती और जोय ।
पांचो जज्जे छोड़ कर प्रीति करो सब कोय ॥’
‘पीताम्बर छाड्यो भलो, साबत भलो न टाट ।
और जात शत्रु भली, मित्र भलो नहिं जाट ॥’
‘जाट न माने गुण करा चना न जाने बाह ।

और लीजिये-

‘छोड़ा छोलन, वृंट उखाड़न, थप थाड़िया और नाई ।

[स्वाती] [माली] [कुम्हार]

इनसे प्रीति कबहूँ न करियो, दशाबाज हैं भाई ॥’

और—

‘बनिये से दुष्ट नहीं खेवट नहीं चमार से ।

जाट से लठैत नहीं, ठग नहीं सुनार से ।

और जात की क्या कहूँ, वद नहीं कुम्हार से ॥

इस प्रकार की निन्दात्मक कहावतें केवल हिन्दी में ही नहीं भारत की प्रायः सभी भाषाओं में हैं। पंजाबी में कहावत है—

सुनार मूद कुनेदा,

नसाह न करिये सुनेदा । ,

अर्थात्—सुनार सूद और कुत्ता यदि सोये भी पड़े हों तब भी इन से सावधान रहना चाहिये ।

समय के साथ साथ यह जाति-भेद की विष वेल लगा-तार बढ़ती गई है और आज हमें उस का कटुकल चखना पड़ रहा है। पिछले दिनों संयुक्त प्रांत में ग्राम पंचायतों के जितने चुनाव हुए हैं उनमें सामान्यतया देहातों में हरिजनों की संख्या पर्याप्त होने के कारण अधिकांश पंच हरिजन ही चुने गये हैं। सैकड़ों वर्षों तक सवर्ण लोग जो हरिजनों के प्रति धृणा प्रदर्शन का अमानवीय कर्म करते रहे उसी की प्रतिक्रिया स्वरूप यह अदृश्य किन्तु महान् रक्तहीन क्रान्ति हुई है और अब शक्ति प्राप्त करके वे ही हरिजन सवर्णों से दबने के स्थान पर उनसे अपने प्रति किये गये व्यवहार का बदला ले रहे हैं और आये दिन गांवों से इस प्रकार की मारपीट और कलह के समाचार आते रहते हैं। 'अवश्यमेव भोक्त य कृतं कर्म शुभाशुभम्' यह केवल शास्त्र का वचन ही नहीं है अपितु एक सनातन सत्य है। ओ अभागे हिंदू! सैकड़ों सालों से जो पाप तुम करते आये हो उसका प्रथित भी तुम्हें करना होगा। तुमने अपने भाईयों का अपमान किया और उसको पांवों से ढुकराया उसी का परिणाम यह हुआ है कि तुम्हें भी अपमानित होना पड़ा और पिछले डेढ़ हजार साल की गुलामी का पट्टा गले में बांधना पड़ा। आज किसी तरह वह पट्टा गले में से निकला है हाथों और पांवों की हथकाड़या और बेड़ियां किसी तरह काटी हैं यदि तुमने शक्ति प्राप्त न की तो तुम बहुत दिन तक स्वतंत्रता का

सुखपभोग कर सकते ।

शक्ति का स्रोत

वह शक्ति स्रोत कौनसा है जिससे शक्तिशाली बनकर राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं। क्या किसी राष्ट्र की विशाल विजय वाहिनी सेनाएँ उसकी शक्ति का प्रतीक है? क्या हजारों लाखों टैंक मर्शिनगने बमतथा अन्य अनेकानेक वैज्ञानिक रास्त्रास्त्र राष्ट्र की शक्ति के द्योतक हैं? राष्ट्र की वास्तविक शक्ति इन बाह्य उपकरणों में नहीं उसके आन्तरिक सामाजिक सगठन में है बाह्य उपकरण तभी तक राष्ट्र की रक्षा करते हैं जब तक उसकी जनता एकता के सूत्र में बंधी हुई है इस एकता के सूत्र के विच्छिन्न होते ही बाहर से आक्रमण करने वाला शत्रु चाहें उब कामयाब हो सकता है। भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है। जब मुहम्मद बिन कासिम, शाहबुद्दीन गोरी, महमूद गजनवी, अहमदशाह अब्दाली और न दरशाह जैसे विदेशी लुटेरों ने भारत पर आक्रमण किया तब हिन्दुओं के पास शस्त्रार्थों की कमी नहीं थी, धन और जन की भी कमी नहीं थी, फिर क्या कारण है उस समय शस्त्रास्त्रों ब्राह्मणों की विद्या और बुद्धि, रनबाकरे त्रियों का शौर्य और पराक्रम और व्यापार-कुशल वैश्यों का अतुल धन-धान्य भी हिन्दूराष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ न हो सका।

कहना न होगा कि जाति-भेद की दरारों ने समग्र हिन्दू समाज को इतना विच्छिन्न बर रखा था कि उसमें एकता नाम को भी नहीं रही थी। यही कारण था कि उत्तर-पञ्चाम से आने वाले उजड़, असूय और गंवार लोग भी इस देश पर आव्रमण करने में सफल हो गये।

जितना बड़ा साम्राज्य महाराज अशोक का था, उतना बड़ा राज्य भारत में न तो मुग़लों का हुआ और न ही अंग्रेजों का। उसका राज्य पूर्व में अरकान से लेकर उत्तर में हिन्दुकुश तक फैला हुआ था। अशोक के इतने बड़े साम्राज्य का रहस्य क्या था? उसने धर्म प्रचार करके लोगों के विचारों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया था। स्थान २ पर स्तूपों और शिला लेखों पर धर्म शिक्षाये अंकित करवा के सानचमात्र की समानता की एक ऐसी भावना उसने देशवासियों में भर दी थी कि जाति-भेद की जुद भावना उसके नीचे ढब गई थी। यही कारण था कि भाज की तरह तब भी भारत की सीमायें आक्रमण कारियों के लिये खुली पड़ी थी, किन्तु एकता के सूत्र में बद्ध और सामाजिक दृष्टि से सुसंगठित इस देश पर किसी विदेशी को अंकाण करने का साहस नहीं हुआ। विचारों की कितनी महान् शक्ति है! लगभग वारह सालों तक भारत इसी प्रकार अभेद्य और अच्छेद्य बना रहा।

परन्तु जब जाति-भेद का अंकुर पुनः पल्लवित हो उठा और हमारी जाति में से सामाजिक बन्धुता से उत्पन्न होने वाली एकता विदा हो गई, हम वेद के 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' आदेश को भूल कर परस्पर ऐक्य सूत्र में बद्ध होनेके स्थान पर विशृंखलित हो गये और अपनो २ विरादिरियों तक सीमित रह कर परले दर्जे के स्वार्थी बन गये तभी विदेशी आक्रमण कारी सफल हुए।

अब फिर हमने राष्ट्रीयपत्रका में अशोक चक्र को स्थान दिया है क्या महाराज अशोक की तरह 'धर्म चक्र' में प्रवर्तन द्वारा जनता के विचारों में अंगनि लाकर और जाति-भेद से दूर रखना और बन्धुता का भावना देश वासियों में भर कर फिर अपने देश की सीमाओं का विस्तार अग्रकान से लेकर हिन्दुकुश तक नहीं करेंगे ? क्या फिर हम चीर्ण गये गे

अयि भुवन मन मोहने ।

अयि निर्मल-सूर्य-करोज्ज्वल-धारिणी,

जनक-जननी-जननी ।

प्रथम प्रभात उदय तव गमने,

प्रथम सामरव तव तपोवने,

प्रथम प्रचारित तपवन भवने,

ज्ञान धर्म वत काव्य चिह्नी !

नील सिन्धु क्षल धौत चरण तल,

अम्बर चुम्बित भाल हिमाचल,
अनिल विकस्ति श्यामल अंचल,
शुभ तुषार किरीटिनी !

चिर कल्याण मयि तुमि धन्य,
देश विदेशो वितरित अन्न,
जान्हवी जमुना विगलित करुणा,
पुरण-पीयूष स्तन्य-वाहिनी !

हे निर्मल सूर्य की किरणों से उज्जवल धरित्री वाली, हमारे
माता-पिता की भी जननी, भुवन-मून-मोहिनी भारत माता तुम
धन्य हो !

तुम्हारे आकाश में सर्व प्रथम प्रभात उदित हुआ,
तुम्हारे तपोबनों में सर्व प्रथम सामवेद की ध्वनि सुनाई दी,
तुम्हारे वनों में सर्व प्रथम ज्ञान, धर्म और काव्य की अजस्र
धारा प्रवाहित हुई ।

नील-सिन्धु का जल तुम्हारा पद-प्रक्षालन करता है,
महान् हिमालय तुम्हारा उन्नत अम्बर चुम्बी मस्तक है, तुम्हारा
शस्य-श्यामल अंचल समीर के आन्दोलन से लहरा रहा
है, हे शुभ तुषार के किरीट को धारण करने वाली !;

देश-विदेश में धन-धान्य का वितरण करने वाली, गङ्गा-
यमुना के रूप में अपने बन्ध से साक्षात् करुणा-सदृश अमृतोपम
दुर्घ-धारा को प्रबाहित करने वाली,
चिरकल्याणी, भुवन-मून-मोहिनी, भारत माता,
तुम धन्य हो ! तुम धन्य हो !! तुम धन्य हो !!!